ISSN: 2393-8900 IMPACT FACTOR : 1.9152(UIF) VOLUME - 4 | ISSUE - 6 | FEBRUARY - 2018

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में नारी चेतना

डॉ. सौदागर सालुंखे

प्रस्तावना

मैत्रेयी पुष्पा नई पीढ़ी के उपन्यासकारों में अपना विशिष्ट स्थानरखती है । मध्यमवर्ग का ही नहीं बल्कि आदिवासी लोगों का जीवनउन्होंने करीबी से देखा और चित्रित किया। ग्राम्य और नारी जीवन हीउनकी अभिव्यक्ति का केन्द्रबिन्दु रहा। उनके उपन्यास अल्माकबूतरी,चाक, इदन्नमम आदि नारी जीवन की यथार्थता प्रस्तुत करने वाले उपन्यास है।राजनीतिक, सामाजिक, वैज्ञानिक आदिक्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन होने के कारण साहित्यिक क्षेत्र भी इससे अछूता नहींरहा क्योंकि साहित्य समाज का दर्पण कहलाता है । भूमंडलीकरण,बाजारवाद आदि के फलस्वरूप व्यक्ति स्वातंत्र, स्वार्थपरता, क्रूरता, संकीर्णताआदि को बढावा मिला। इस युग में दुनिया की दुरी कम हो गयी परमानवीय मुल्य, रिश्ते-नाते आदि मिटने लगे। जागतिकीकरण के फलस्वरूपसारा विश्व एक बन गया उस मंडी में हर चीज बेचने के लिए रखी गयीहै। स्त्री को उपभोग की वस्तु माना गया साथ ही साथ स्त्री में भीस्वेच्छाचार या निरकुंशता की प्रवृत्ति बढ़ने लगी । फलस्वरूप भारतीय संस्कृति, परिवार व्यवस्था आदि मिटने लगी स्त्री और पुरुष दोनों में हमकिसी से कम नहीं की भावना जागृत होने के कारण परिवार में हमेशाअशांति मैं-मैं तू-तू यहाँ तक कि विवाह विच्छेद भी बढ़ने लगे औरसंतानों में अनाथ प्रज्ञा, निराशा, कुत्सित भावना बढ़ने लगी अनाथाश्रमोंकी वृद्धि हुई। इन सभी मुद्दों के साथ मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यासों मेंनारी विषयक सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक सांस्कृतिक शैक्षिकआदि समस्याओं पर भी प्रकाश डाला है।हिन्दी उपन्यासों में संघर्ष चेतना अपनी चरमसीमा पर दृष्टिगोचर होती है इस काल के उपन्यासों के स्त्री पात्रों कासंघर्ष सभी क्षेत्रों में मुखरित होता नजर आता है मैत्रिय पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री पात्र अपनी समसामयिक परिस्थितियों से प्रभावितहोकर अपने अस्तित्व तथा समाज को ध्यान में रखकर संघर्ष के लिएउतर आते हैं।

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों के नारी पात्र भाग्य और भगवान केशिकंजे से बाहर निकलकर तर्क के आधार पर विचार करते हैं । वैज्ञानिकप्रगति और औद्योगीकरण के फलस्वरूप रूढियों और परंपराओं से हटकरयथार्थ के धरातल पर हकीकत को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखते हैं।अल्मा कबूतरी की अल्मा हो चाहे चाक की नैनी सारंग हो सभी स्त्री पात्रकिसी आदर्श पालन में अपना जीवन व्यतीत नहीं करती बल्कि अपनेजीवन में आये संदिग्ध परिस्थिति को पार करके हिम्मत से आगे बढ़तीहुई दिखाई देते है । परंपरा संप्रदायों से बाहर आकर नये तरीके से अपनेऔर आसपास के परिवेश को समझना चाहती है। पुरुष प्रधान

समाज काविरोध करके समानता के धरातल पर अपने अस्तित्व के लिए लड रही है।मैत्रेयी की नारी वर्तमान युग की नारी है। अपनी बात बिना डरते हुए सामनेरखती है। धर्म, दर्शन, कला, साहित्य, संगीत आदि का परंपरागत सांप्रदायिकमूल्यों को धिक्कारती है । उसमें विद्रोह का स्वर कूट-कूट कर भरा हुआहै ।

मैत्रेयी पुष्पा के अनुसार स्त्री के साथ स्त्री की देह जुडी हुई है।समाज में रहना है तो वह देह को छोड़कर तो नहीं चल सकती पर अपनेआसपास आत्मविश्वास की सुरक्षा कवच स्थापित करना चाहती है। वहशोषण के खिलाफ विद्रोह करती हुई नजर आती है। कस्तुरी कुंडल बसै की कस्तूरी कहती है मैं शादी नहींकरूंगी सोलह वर्षीय लड़की जब ऐसा कहती है तो सारे घर में सन्नाटाछा जाता है। धार्मिकों के अनुसार विवाह का संस्कार महत्वपूर्ण है। स्त्रीजीवन को नया मोड देने से दो घर आबाद हो जाते हैं पर लड़की के ऐसेविचार से घरवालों का उदगार है कस्तूरी, लड़कियों से ऐसी दुस्साहसकी उम्मीद कौन कर सकता है? वे तो माँ बाप के सामने सिर उठाकरबात तक नहीं कर सकती, मरने का शाप हँस-हँसकर झेलती है औरगालियाँ चुपचाप सहन करती हुई अपने शील का परिचय देती है। तूमर्यादा तोड़ने पर आमदा क्यों है?

वैज्ञानिक युग में भी ऐसी धारणा क्यों? स्त्री विवाह न करने सेधर्म भ्रष्ट हो जाता है और पुरुष प्रधान अविवाहित रहता है तो उसेब्रह्मचारी कहकर पूजा जाता है। स्त्री का घर छोड़ना उसे कुलटा बनाताहै। पर पुरुष के घर छोड़ने से उसे महापुरुष कहा जाता है।

अगन पाखी में स्त्रीवादी चिंतन धारा का नया रूप उभरकरआता है। इसमें पंडित जी बोलते हैं विराटवाले जितने बड़े हैं उतने उदारहै । उन्हें क्या चाहिए ? बस शुद्ध कुल की बेटी । पवित्र चरित्रवादी । हाँ ऐसीवैसी के लिए उनके यहाँ जगह नहीं धनधान्य की उनके यहाँ कमी नहींसो दायगा माँगे और यहाँ भी कंचन कन्या है। चाल चलन को दौलत सेभरपूर। पुरुष प्रधान समाज में स्त्री की ऐसी शोचनीय स्थिति क्यों?भुवन मोहिनी होनहार लड़की है। उसके गुणों का लाभ ससुराल वालोंको मिलता है और कुल मर्यादा भी आबाद रहेगीपरभी चित्र और गुणोंसे भी धन दौलत की ही प्रधानता क्यों?

खुली खिड़कियाँ उपन्यास में भी स्त्री स्वातंत्र्य का जिक्र हुआहै। स्त्री का कोई धर्म नहीं होगा, जिस घर में जन्म हुआ वही धर्म बना।जिससे ब्याहा गया वह धर्म हो गया। शूद्रों के लिए सेवा धर्म है। क्षत्रियोंके लिए रक्षा धर्म है । वैश्यों के लिए व्यापार धर्म बताया है। पर स्त्री काकोई धर्म नहीं क्योंकि इसका आधार वर्ण नहीं, जाति नहीं, व्यवसाय नहींशुद्ध लैंगिक भेद है। स्त्री को सिर्फ भोग का वस्तु माना है। इस पुरुषप्रधान समाज में स्त्री को जागृत करने की कोशिश मैत्रेयी पुष्पा ने की है।इसी उपन्यास में स्त्री विषयक विचार को इस प्रकार प्रस्तुतकरता है क्या आज की नारी ने ऐसे दःखों को औरत की नियति मानलिया है नहीं, तो दूसरे परिवार में प्रवेश करती हुई वह धर्म औरसंस्कृति की परंपरा से आक्रांत क्यों है? आडंबर की आदत उसके वजुदका हिस्सा बन जाती है और यहीं से सारा जीवन पुरुष के लिए पूजाओंका उत्सव हो जाता है। भक्ति करते-करते कब अंध भक्ति के हवाले होजाती है पता ही नहीं चलता ।

पुरुष मौज मस्ती करें और स्त्री ही धर्म, संप्रदाय आदि का पालनकरें, ऐसा क्यों? भारत में सती नारियों की भव्य समाधियाँ मंदिर आदिदिखाई देते हैं । स्त्री को जलाकर धर्म की रक्षा की जाती है। इन सभीविषयों पर मैत्रेयी जी ने आक्रोश व्यक्त किया है। उनका कहना है हाडमांस की नारी को जलाकर मारना किस धर्म को श्रेष्ठ बनाता है? यह स्त्रीअजरता-अमरता की स्मृति है। पुरुष की भलाई या हित के लिए स्त्रीकरवा चौथ का व्रत, जप-तप आदि करती है, पर पुरुष स्त्री की भलाई के लिए ऐसा कुछ भी नहीं करता।

अल्मा कबूतरी उपन्यास में अल्मा श्रीराम शास्त्री को मुखाग्निदेकर सदियों से चली आई रूढ़ि का खंडन करती है। पिता की संपत्तिका उत्तराधिकारी पुत्र होता है। पर यहाँ पर अल्मा अपने पति श्रीराम शास्त्रीकी उत्तराधिकारी हो जाती है । जन समूह स्तब्ध रह गया लोगों की आँखेंअंधी या नजर बुरी? अल्मा ने अहिस्ता-अहिस्ता अग्निमुख उठा लियाऔर अनवरत गूंजती मंत्र ध्वनि के बीच श्री राम शास्त्री की चंदन चिता कोअग्नि समर्पित कर दी। मैत्रेयी के नारी अल्मा ने मुखाग्नि देकर एकओर सब अधिकार अपनी ओर सुरक्षित रख लिए। तो दूसरी ओर रूढिनियमों के खिलाफ क्रांतिकारी कदम उठाया। मैत्रेयी का मानना है कि स्त्रीको दबाव में रखने के कारण वह कुछ नहीं कर पाती है पर जब उसेमौका मिलता है तब वह इस प्रकार के निरर्थक बंधनों से मुक्त होनाचाहती है।

विजन उपन्यास की आभा दी विवाह जैसा परंपरागत बंधनठुकराकर अपना व्यक्तित्व निखारती और दूसरों को भी समझाती है।अपनी उस मैं, जिसने तुम्हें अभाव झेलकर, मुश्किलें सहकर, कईविरोधों को पार करके पढ़ाया लिखाया। उस माँ को तीन नाम रसोईदारिन,धोबिन, मोचिन देकर अपने राजमहल को लौट जाओ। वह भी तुम जैसीबेहया, बेलिहाज और अहसान फरामोश लड़की से मुक्ति पाए। शेम टू यू शेम टू अस। आभादी ने कहा। समाज और संस्कृति में नारी संबंधी अनेक प्रकार की धाराप्रचलित है उसे अलग-अलग रूपों में देखा गया है। एक ओर नारी कोदेवी मानकर पूजा की जाती है। तो दूसरी ओर उसे पाप की खान और मात्र भोग की वस्तु समझा गया है । नारी संबंधी ऐसी अवधारणा पुरुष वर्गद्वारा निर्मित है।पुरुष सत्ता प्रधान भारतीय संस्कृति में पुत्र को ही अधिक महत्वदिया जाता है। यह विचार स्त्री के मन पर इतनी गहराई तक गया है किहर एक औरत भी पुत्र को ही जन्म देना चाहती है। पुत्री नहीं पर मैत्रेयीजी का विचार है कि पहले स्त्री को मनुष्य के रूप में स्वीकार करो बाकीसब बाद में कस्तूरी कुंडल बसै उपन्यास में इसका जिक्र हुआ है।मैत्रेयी ने स्त्री का पक्ष बहुत मजबूती से रखने की कोशिश की है। उन्होंनेस्त्री को स्वतंत्र अभिव्यक्ति दी है। कस्तूरी ने मैत्रेयी को जन्म दिया औरमैत्रेयी ने अपनी बेटी को जन्म दिया। वे पुरुष प्रधान संस्कृति का विरोधहैं। स्त्री का कुकर्म होता है और पुरुष कुकर्म करे तो वह कुकर्म नहीकहलाता। खुली खिड़कियाँ उपन्यास में इसी का जिक्र प्रस्तुतहुआ है। माना यह भी कि यह प्रवृत्ति स्त्री की आजीविका का साधन नहींनारी शोषण का मामला है जैसे स्त्री अकेले ही `यह कुकर्म कर डालतीहो, दूसरा पक्ष यहाँ सिरे से गायब रहे ऐसा क्यों होता है। पवित्र स्त्रीउसे ही कहा जाता है। जो एक के लिए समर्पित करती है। कुछ घंटों केलिए कोई स्त्री सेवा देती है तो वह वेश्या कहलाती है। जबकि आजीवनसेवा के लिए पत्नी कहा जाता है। अर्थात स्त्री को अन्य पुरुष से बचनापुरुष की अपनी ही अहं तुष्टि का गंभीर मामला है। दो स्त्रीयों का स्तरीयअंतर यही है कि पत्नी निजी संपत्ति है। तो वेश्या सार्वजनिक संपत्ति।मैत्रेयी के अनुसार मुक्ति और आजादी के खतरे सर्वत्र हैं। उनसे गुजरकरजाना है। पत्नी के मुकाबले वेश्या अधिक स्वतंत्र होती है। वह किसी कीदासता स्वीकार करना नहीं चाहती क्योंकि वह स्वयं आजीविका अर्जितकरनेवाली होती है। अल्मा कबूतरी उपन्यास में भी इसी पर प्रकाश डाला गया है। यहाँ एक उल्लेखनीय विचार है कि कामतृष्णा जिस प्रकारपुरुष की होती है उसी प्रकार स्त्री की भी होती है, पर पुरुष को समाजक्यों छुठ दे? स्त्री के मन में एक उदार मानवतावादी दृष्टिकोण विद्यमानहै। पर उसे सदैव उपभोग की वस्तु माना गया है ।

चिन्हार में भी इसी पर प्रकाश डाला है कि पर इतना सोच,कि चाचा भतीजी का ब्याह कर रहा है तू अकेली रांड-विधवा कैसे ब्याह,शादी करेगी? मर्द की उमर नहीं देखी जाती री। स्त्री को किसी भीउम्र में उपभोग की वस्तु माना जाता है। विवाह योग्य उम्र हो या ना होवह वृद्ध से भी ब्याही जाती है। यह समय का सच है

इस प्रकार स्त्री कोसदैव दबाए रखा है। पुरुष प्रधान समाज में उसकी मजबूरियों का फायदाउठाया जा रहा है। पवित्रता की धारणा मन में गहराई से बैठ जाने केकारण बलात्कार जैसे मामलों में स्त्री अपनी जान तक दे देती है। इन सभीसमस्याओं में घेरी स्त्री की आँख खोलने की कोशिश मैत्रेयी पुष्पा केउपन्यासों में हुई है।शांत, सुशील, सौज्वल, करुणा दया, क्षमा, शांति से युक्त सरझुकाकर चलनेवाली नारी भारतीय आदर्श की मूर्ति कहलाती है। परआधुनिक नारी सत्व की पहचान चाहती है। वह हकों के लिए लड़नाजानती है और स्वतंत्र विचाराभिव्यक्ति रखती है।धर्म के संदर्भ में ऐसीनारी कुलटा, विद्रोही कहलाती है। मैत्रेयी का मानना है कि स्त्री समाजको संघटित होकर इसके विरुद्ध आवाज उठानी होगी।मैत्रेयी की नारी रूढि परंपराओं का खंडन करती दिखाई देती है।कस्तूरी कुंडल बसै में कस्तूरी कहती है। मैं विवाह नहीं करूंगी तबसारा धर्म विनाश होने को आ रहा था क्योंकि विवाह को हमारी संस्कृतिमें एक महत्वपूर्ण संस्कार माना जाता है और पति के साथ रहना चाहे वहकैसा ही क्यों न हो, उसके साथ रहना धर्म माना जाता है। इदन्नममकी मंदा अपने जीवन का उद्धेश्य सेवाभाव मानती है। जो उसके हित मेंनहीं है। पुरुष प्रधान संस्कृति में स्त्री को अपना स्थान बनाना होगा गलतबातों पर टीका टिप्पणी करके ठीक निर्णय लेने का अधिकार स्त्री को भीमिले। पुरुषों ने स्त्री को सदैव उपभोग की वस्तु माना है। स्त्री को भीदैहिक भूख होती है। वह भी एक जीव है। ऐसा नहीं माना, घर, परिवारआदि के देखरेख की जिम्मेदारी सिर्फ स्त्री ही क्यों, पुरुष की भी समानजिम्मेदारी हो।

हमारी भारतीय संस्कृति में स्त्री शांत, आज्ञाकारी, सेवाभाव सेयुक्त, कार्यकुशल आदि रूप में स्वीकृत है। पर विकास क्रम में स्त्रियाँभी कहती है कि हम इक्कीसवीं सदी में आ गए क्योंकि वक्त के सफरमें अपने चलते उन रूढ परंपराओं, थोथी संस्कृति और अन्यायपूर्णइतिहास का पर्दाफाश हो चुका है। माना कि हम परिवार की धुरी हैं, परकहना चाहते हैं की धुरी को गाड़ी के वजन की गतिशीलता ने मनमाने ढंगसे घिस डाला है।"

व्यक्ति का विकास स्वयं निर्णय क्षमता पर निर्भर रहता है जब तकवह अपने लिए निर्णय नहीं ले पायेंगी तब तक उसका विकास संभव नहींइसी से नारी को दबाव तंत्रों से बाहर निकलकर नये ढंग से सोचना होगा। कस्तूरीकुंडल बसै का एक उदाहरण है। होंगे क्यों नहीं औरतें उनकी इज्जत है| इज्जत की रक्षा कौन नहीं करना चाहता? लड़की को अब समझ लेनाचाहिए, चिनगारियों शोलों से भिडेंगी तो अपनी सूरत खोयेंगी।

कस्तूरी कुंडल बसै में प्रिन्सिपाल मैत्रेयी पर अन्याय करते हैतो वह चीख कर कहती है। यह स्कूल किसी प्रिन्सिपाल की बेपौतीनहीं। मैनेजमेंट कमेटी सुप्रीम कोर्ट नहीं अगर यह स्कूल व्याभिचारियोंऔर अन्यायी शिक्षकों का अड्डा है तो यह मेरे योग्य स्कूल नहीं। थू हैयहाँ की शिक्षा पर ।।

विजन उपन्यास में नेहा शरण डॉक्टर पति से ब्याह जाती हैउसकी दहेज की कोई माँग नहीं है । उन्हें एक डॉक्टर बहू चाहिए होतीहै। मत करो मुझसे कोईआशा मैं सब समझती है। वे चालाक लोग हैं।अपने चंगुल में लेना चाहती है। नहीं तो उनके बेटे के लिए एक मामूलीघर की लड़की वह भी दूसरे शहर की मरवाने या बहकाने की अनेकतरकीब हैं। मैं तरकीबों में नहीं फसुंगी। मम्मी ने पैसे की लालचदिखाकर मुझे और मेरे माता-पिता को हिप्नोटाइज करना चाहते हैं। आजकल कमानेवाली लड़की से दहेज नहीं मांगा जाता क्योंकि उन्हें पताहै कि कमानेवाली लड़की है तो उनके लिए जमाने भर की संपत्ति होजाती है। आजकल के जमाने में अनपढ़ या न कमानेवाली लड़की कीस्थिति बहुत शोचनीय है क्योंकि बहुत सारा दहेज देकर शादी करने परभी लड़के वालों का शोषण झेलते रहना पड़ता है। दूसरी ओर मैंके में भीउसके लिए स्थान नहीं होता। इसी से उसे धोबी का कुत्ता न घर का नघाट का इस प्रकार की अतंत्र स्थिति झेलनी पड़ती है। कस्तूरी कुंडलबसै उपन्यास की मैत्रेयी का उदगार है मायका तभी तक बना रहता है,जब तक कि तुम अपने हिस्से को भाइयों के हवाले

किये रहती हो। क्याकिसी पुरुष को अपना मायका बनाये रखने के लिए इस तरह अपनाअधिकार खोते देखा है।

आधुनिकता बोध संपन्न होने का अर्थ केवल इतना ही नहीं होगाकि वह वर्तमान के प्रति सजग भी हो। इस आधुनिकीकरण के कारणऔर राजनीतिक विधान से प्रेरणा पाकर नर-नारी समानता की बात कीगयी। स्त्री मुक्ति के लिए आंदोलन हुए। अपने स्वतंत्र अस्तित्व के साथअपने स्वातंत्र्य की रक्षा के लिए मोर्चे पर लड़ने की तैयारी की गयी। परआजभी नारी विषयक चिंतन में यथेष्ट बदलाव नहीं आया। परिणाम स्वरूपमहिलाओं ने राजनीति में अपनी भागीदारी देने की ठानी। कहा था किआरक्षण की सफलता तो तब है जब महिलाएं अपनी बात ग्राम पंचायतों,जिला स्तर की कमेटियों, विधान सभाओं और संसद में दर्ज ही न कराएंउस पर अमल करवाएँ। पंचायतों में स्त्री को आरक्षण तो मिल गया परयदि स्त्री अपनेअधिकारों का उपयोग ठीक ढंग से नहीं करेगी तो उसकी उन्नती कैसेसंभव है? आजकल देखा जाता है कि ग्राम पंचायतों में स्त्री सरपंचरहती है। पर कारोबार पति देख रहा है। इसी से मैत्रेयी पुष्पा स्त्री कोसचेत होने के लिए खुली खिड़कियाँ उपन्यास में कहती है। राजनीतिमें राजनीति के हकों के अतिरिक्त चौकन्नापन चाहिए और महिलाओंको तो पुरुष से सौ गुना सतर्क रहना होता है। क्योंकि उनका प्रवेश बहुतपुराना नहीं। फिर ताज्जुब न हो तो क्या हो कि स्त्री होकर यह गफलतक्यों? इस गफलत के चलते स्त्री वर्ग का विकास होगा? मैत्रेयी पुष्पा ने अपने लेखन में गाँव की नारी चित्रित की है। वहनारी विचारों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति चाहती है । रूढी, संप्रदाय आदि बंधनोंसे मुक्त होकर स्वतंत्र जीवन जीना चाहती है। और राजनीति में भी याप्रत्येक क्षेत्र में पुरुष के साथ बराबरी करती हुई नजर आती है। मैत्रेयी नेअपने कथा साहित्य में वर्तमान से जुझती हुई नारी का चित्रण हर मोर्चेपर किया है। और पुरुष प्रधान समाज में धर्म दर्शन अर्थ, संस्कृति,राजनीति साहित्य आदि क्षेत्रों में अपना ही एक स्वतंत्र छाप रखती हईनजर आती है। अर्थात जन्म से ही नकारे जानेवाली स्त्री अपना अस्तित्वखुद निर्माण कर रही है। नारी मातृत्व, उत्तरदायित्वऔर कृतित्व से घिरकर अपना ही एक स्वतंत्र अस्तित्वस्थापित कर रही है।